बर्लिन (जर्मनी)
मई २६, १९९९

सन्देश संख्या ७

जीवन समस्यापूर्ण नहीं
(मरणासन्न मग्दलेना के निवास पर)

जीवन समस्यापूर्ण नहीं बल्कि विस्मयपूर्ण है। चित्तवृत्ति जीवन के प्रवाह से समस्याओं का सृजन करती है क्योंकि उसी से ये वृत्तियाँ स्थायित्व प्राप्त करती हैं।

मन समस्याओं के माध्यम से अपना परिरक्षण करता है। यह अपने स्थायीकरण हेतु प्रत्येक स्थिति को समस्या में परिवर्तित करने का प्रयत्न करता है।

मन को जब समस्याओं से वंचित रखा जाता है तब वह निर्मनावस्था में विलीन हो जाता है। जीवन के सम्पूर्ण मर्म को विस्मय की कला एवं निष्कपटता के आनन्द के माध्यम से अनुभव करें।